REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
हिंदी
वाच्य एवं पदबंध
LIVE
30-01-2025 11:00 AM

वाच्य

- **कर्तृवाच्य** — कर्ता की प्रधानता
- **कर्मवाच्य** — कर्म की प्रधानता
- **भाव वाच्य** — भाव की प्रधानता

परिभाषा ⇒ क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव तीनों में से किसी एक की भी प्रधानता है। उसे वाच्य कहते हैं।

हिन्दी में वाच्य तीन प्रकार के होते हैं।

1. कर्तृ वाच्य - क्रिया के जिस रूप से वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता है। उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं।

वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं। कर्तृ वाच्य में अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रिया प्रयोग होती है।

जैसे – लड़का खाता है।

राम दूध पीता है।

मोहन खाना खाता है।

सीता गाती है।

घोड़ा भागता है।

राम पत्र लिखता है।

नोट – ने विभक्ति कर्तृ वाच्य की पहचान होती है। कर्ता के साथ विभक्ति हो और कर्म के साथ विभक्ति न हो तो क्रिया कर्म के अनुसार बदलेगी।

अपवाद – सीता ने अनार खाया।

गीता ने खीर खाई।

अजय ने पुस्तक पढ़ी।

गौरव ने अखबार पढ़ा।

कर्तृ

2. कर्म वाच्य - क्रिया के जिस रूप से कर्म की प्रधानता का बोध हो। उसे कर्म वाच्य कहते हैं।

मुख्य क्रिया सदैव सकर्मक होती है।

क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार बदलता है।

जैसे – आम खाया जाता है।
पुस्तक पढ़ी जाती है।
गीत गाया गया।
लेख लिखा गया।
उपन्यास मेरे द्वारा पढ़ा गया।
छात्रों द्वारा निबंध लिखे गए।
राम द्वारा पत्र लिखे गए।
पूजारी द्वारा पूजा की जाती है।
बिल्ली के हाथों चूहा मारा गया। (बिल्ली द्वारा चूहा मारा गया)

के द्वारा

ओमप्रकाश के द्वारा भोजन किया गया।

आपसे फूल तोड़ा जायेगा।

सोहन द्वारा किताब पढ़ी जाती है।

छात्रों द्वारा नाटक प्रस्तुत किया जा रहा है।

कर्तृवाच्य में कर्ता के साथ कोई विभक्ति लगी हो तो उसे हटाकर से, द्वारा या के द्वारा विभक्ति लगा दी जाती है। कर्म वाच्य में कर्ता की अपेक्षा कर्म की प्रधानता दी जाती है।

3. भाव वाच्य - क्रिया के जिस रूप से भाव की प्रधानता का बोध हो। उसे भाव वाच्य कहते हैं।

नोट- कभी-कभी भाव वाच्य का प्रयोग असमर्थता दिखाने के करते हैं। तथा क्रिया अकर्मक, एकवचन, अन्यपुरुष होती है।

जैसे – मुझसे बैठा नहीं जाता।
लड़कों से चला नहीं जाता।
राम से खाया नहीं जाता है।
मुझसे उठा नहीं गया।
सीता से हँसा नहीं जाता।
तोते से उड़ा नहीं गया।
धूप में चला नहीं जाता।
मुझसे शोर में नहीं जाता।

चलो अब सोया जाए।
चलो घूमने चला जाए।
मोहन से लिखा जाता।
राम से तेज दौड़ा जाता।
अब चला जाए।
अब पढ़ा जाए।

अपवाद

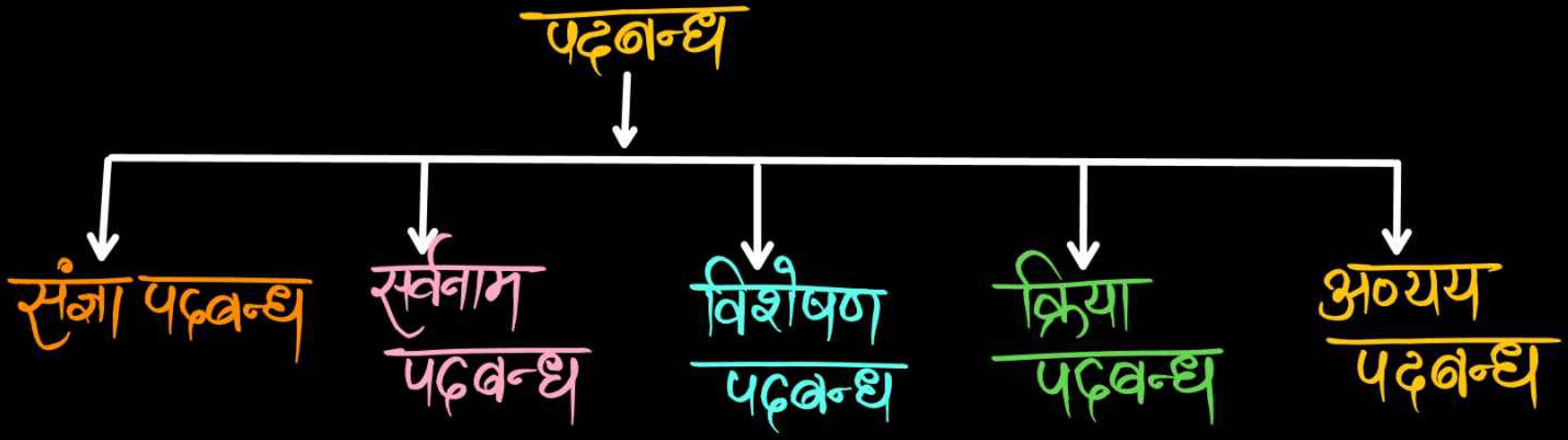
पदबन्ध
संज्ञा पदबन्ध
सर्वनाम पदबन्ध
विशेषण पदबन्ध
क्रिया पदबन्ध
अव्यय पदबन्ध

पद - वाक्य से अलग रहने पर शब्द और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द पद कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में - वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है।

पदबन्ध ⇒ जब दो या दो से अधिक शब्द नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं उसे पदबन्ध कहते हैं।

दूसरे शब्दों में - वाक्य का एक ऐसा हिस्सा होता है जो किसी पद का काम करता है।

डॉ० हरदेव बाहरी ने 'पदबन्ध' की परिभाषा इस प्रकार दी है- वाक्य के उस भाग को, जिसमें एक से अधिक पद परस्पर सम्बद्ध होकर अर्थ तो देते हैं, किन्तु पूरा अर्थ नहीं देते पदबन्ध या वाक्यांश कहते हैं।

जैसे-

(1) सबसे तेज दौड़ने वाला छात्र जीत गया।

(2) यह लड़की अत्यंत सुशील और परिश्रमी है।

(3) नदी बहती चली जा रही है।

(4) नदी कल-कल करती हुई बह रही थी।

पदबन्ध के भेद -

मुख्य पद के आधार पर पदबंध के पाँच प्रकार होते हैं-

(1) संज्ञा पदबंध

(2) विशेषण पदबंध

(3) सर्वनाम पदबंध

(4) क्रिया पदबंध

(5) अव्यय पदबंध

(1) संज्ञा-पदबंध- वह पदबंध जो वाक्य में संज्ञा का कार्य करे, संज्ञा पदबंध कहलाता है।

दूसरे शब्दों में- पदबंध का अंतिम अथवा शीर्ष शब्द यदि संज्ञा हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हो तो वह 'संज्ञा पदबंध' कहलाता है।

जैसे-

(a) चार ताकतवर मजदूर इस भारी चीज को उठा पाए।

(b) दशरथ पुत्र राम ने रावण को मारा था।

(c) अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।

(d) आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।

उपर्युक्त वाक्यों में पीले छपे शब्द 'पीला पदबंध' है।

(2) विशेषण पदबंध- वह पदबंध जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाता हुआ विशेषण का कार्य करे, विशेषण पदबंध कहलाता है।

दूसरे शब्दों में- जब एक से अधिक पद मिलकर विशेषण पद का कार्य करें, तो उसे विशेषण पदबंध कहा जाता हैं।

जैसे-

(a) तेज चलने वाली गाड़ियाँ प्राय: देर से पहुँचती हैं।

(b) उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।

(c) उसका घोडा अत्यंत सुंदर, फुरतीला और आज्ञाकारी है।

(d) वह बहुत सुन्दर कविता लिखता है।

उपर्युक्त वाक्यों में पीले छपे शब्द 'विशेषण पदबंध' है।

(3) सर्वनाम पदबंध- वह पदबंध जो वाक्य में सर्वनाम का कार्य करे, सर्वनाम पदबंध कहलाता है।

दूसरे शब्दों में- जब कई पद मिलकर सर्वनाम पद का कार्य करें, तो उसे सर्वनाम पदबंध कहा जाता है।

हमारे देश के नेताओं में कुछ नेता अच्छे हैं।

उदाहरण -

बिजली-सी फुर्ती दिखाकर आपने बालक को डूबने से बचा लिया।

शरारत करने वाले छात्रों में से कुछ पकड़े गए।

विरोध करने वाले लोगों में से कोई नहीं बोला।

उपर्युक्त वाक्यों में पीले छपे शब्द सर्वनाम पदबंध हैं क्योंकि वे क्रमशः 'आपने' 'कुछ' और 'कोई' इन सर्वनाम शब्दों से सम्बद्ध हैं।

(4) क्रिया पदबंध- वह पदबंध जो अनेक क्रिया-पदों से मिलकर बना हो, क्रिया पदबंध कहलाता है।

दूसरे शब्दों में- जब कई क्रियाएँ मिलकर एक क्रिया पद का कार्य करें, तो उसे क्रिया पदबंध कहा जाता है।

क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया पहले आती है। उसके बाद अन्य क्रियाएँ मिलकर एक समग्र इकाई बनाती है। यही 'क्रिया पदबंध' है।

जैसे-

(1) वह बाजार की ओर आया होगा।

(2) मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।

(3) सुरेश नदी में डूब गया।

(4) अब दरवाजा खोला जा सकता है।

उपर्युक्त वाक्यों में पीले छपे शब्द 'क्रिया पदबंध' है।

(5) अव्यय पदबंध- वह पदबंध जो वाक्य में अव्यय का कार्य करे, अव्यय पदबंध कहलाता है।

दूसरे शब्दों में- जब कई पद मिलकर क्रियाविशेषण पद का कार्य करते हैं, तो उसे क्रियाविशेषण या अव्यय पदबंध कहा जाता हैं।

इस पदबंध का अंतिम शब्द अव्यय होता है।

उदाहरण -

अपने सामान के साथ वह चला गया।

सुबह से शाम तक वह बैठा रहा।

पहले से बहुत धीरे चलने लगा।

इन वाक्यों में पीले छपे शब्द अव्यय पदबंध हैं।

पक्षी पिंजरे के अन्दर बैठा है।

आज गाड़ी बहुत जल्दी आ गई।